بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-19.04.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

# ओहद की लड़ाई में सहाबा रज़ीयल्लाहु अन्हुम एवं सहाबियात रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमअीन के बलिदानों तथा ओहद के शहीदों के बुलन्द स्तर का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 19,अप्रैल 2024. स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- ओहद की लड़ाई की घटनाओं के अंतर्गत कुछ अन्य घटनाएँ पेश हैं जिनसे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र के बारे में और अधिक सुन्दर आचरण का पता चलता है। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ीयल्लाहु अन्हु बयान करते है कि उनके वालिद हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमरू रज़ी. जब फ़ौत हुए तो उन पर ऋण था। मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सहायता मांगी कि आप उनके ऋण दाताओं को समझाएँ कि वे उनके क़र्ज़ में से कुछ कमी कर दें, तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे यह इच्छा व्यक्त की, परन्तु उन्होंने कमी न की। तब आप स. ने मुझे फ़रमाया कि जाओ तथा अपनी खजूरों की हर एक जाति को अलग रखना तथा फिर मुझे सन्देशा भेजना। अतएव मैंने ऐसा ही किया तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहला भेजा। आप स. तशरीफ़ लाए तो आप खजूरों के ढेर पर अथवा उनके बीच में बैठ गए। फिर आप स. ने फ़रमाया- इन लोगों को (ऋण दाताओं को) खजूरें माप कर दो। अतः मैंने उनको माप कर दिया, यहाँ तक कि जो उनका हक़ था मैंने उनको पूरा दे दिया, फिर भी मेरी खजूरें बच गईं, ऐसा लगता था कि उनमें कुछ कमी न आई हो।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- हज़रत सअद बिन मुआज़ की बूढ़ी तथा कमज़ोर माँ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इश्क़ में मदीने से बाहर निकल आईं जिसका विवरण पिछले ख़ुत्बः में पहले बयान हो चुका है कि आप स. ने अपनी सवारी रुकवा कर उनके बेटे की शहादत पर खेद प्रकट किया, यह विवरण

बयान करने के बाद हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते ह कि घटनाओं पर विचार करो तथा देखो कि आप स. को कितना अधिक आभास था कि जिस किसी को कष्ट होता है उसके साथ सहानुभूति की जाए। इसके बाद आप स. ने उस बुढ़िया से फ़रमाया- तुम भी ख़ुश हो तथा दूसरी समस्त बहिनों को भी शुभ सूचना दे दो जिनके रिशतेदार लड़ाई में शहीद हो गए हैं, यह ख़ुश खबरी सुना दो कि हमारे जितने आदमी आज शहीद हुए हैं अल्लाह तआला ने उन सबको जन्नत में एक साथ रखा है तथा सबने दुआ की है कि ऐ ख़ुदा, हमारे परिजनों को कुशल मंगल रखयो। तत्पश्चात आप स. ने स्वयं भी दुआ की, कि ऐ ख़ुदा, ओहद के शहीदों के परिजनों के लिए अच्छे शुभ चिंतक पैदा फ़रमा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं- इससे पता चलता है कि किस तरह आप स. ने मदीने में दाख़िल होने से पहले ही ओहद के शहोदों के परिजनों की सांत्वना फ़रमाई तथा उनके साथ सहानुभूति प्रकट की, तथा बावजूद इसके कि आप स. ज़ख़मी हो चुके थे, आप स. के निकटतम रिशतेदार शहीद हो गए थे तथा आपके प्रियतम सहाबियों की मृत्यु हो चुकी थी। आप स. बराबर हर एक स्थान पर लोगों की दिलजूई फ़रमा रहे थे। आप स. को अपने कष्ट का तनिक भी आभास नहीं था। आप स. के अतिरिक्त ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हो सकता जो इतनी कठिनाईयों, इतने दुःखों तथा इतनी पीड़ा के समय दूसरों के साथ सहानुभूति प्रकट करे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं- इस युद्ध में भी हम देखते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किस तरह उत्साह पूर्वक साहस तथा अपने उच्च नैतिक आचरण का नमूना पेश किया तथा लोगों के साथ सहानुभूति एवं दिलजूई की। इस युद्ध के वर्णन से पता चलता है कि आप स. शिष्टाचार के कितने उच्चतम स्तर पर थे तथा इस युद्ध में सहाबा रज़ी. के महान बलिदानों का भी पता चलता है। जब आप स. युद्ध की समाप्ति पर मदीना तशरीफ़ ला रहे थे, मदीने की महिलाएँ जो आप स. की शहादत की सूचना सुन कर अति व्याकुल थीं, अब वे आप स. के आगमन की सूचना सुन कर आप स. के स्वागत के लिए मदीने से बाहर कुछ दूरी पर पहंच गई थीं। उनमें आप स. की साली (अर्थात-पतनी की बहिन) हज़रत हमना सुपुत्री जहश रज़ी. भी थीं जो हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ी. की पतनी थीं। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब बारी बारी हज़रत हमना रज़ी. को उनके मामू हज़रत हमज़ा रज़ी. तथा उनके भाई अब्दुल्लाह सुपुत्र जहश रज़ी. की शहादत की सूचना दी तो आप रज़ी. ने इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा तथा उनके दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ को, परन्तु अपने पति हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ी. की शहादत की सचना सन कर आपकी आँखों से आँसू जारी हो गए और कहा- हाए खेद है। यह देख कर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- देखो, एक स्त्री को अपने पति के साथ कितना गहरा लगाव होता है। आप स. ने फ़रमाया- महिला को ऐसे समय पर अपने निकटतम रिशतेदार तथा सग रिशतेदार भी भूल जाते हैं किन्तु उसे प्यार करने वाला पति याद रहता है। इसके बाद आप स. ने हमना से पूछा कि तुमने अपने पति के निधन की सूचना सुन कर हाए खेद है, क्यूँ कहा था? तो आपने निवेदन पूर्वक उत्तर दिया- या रसूलुल्लाह, मुझे उसके बेटे याद आ गए थे कि उनकी रखवाली कौन करेगा। आप स. ने

फ़रमाया- मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि ख़ुदा तआला उनकी तुम्हारे पति से बढ़ कर निगरानी करने वाला कोई व्यक्ति पैदा कर दे। अतः इस दुआ का परिणाम यह था कि हज़रत हमना की शादी हज़रत तलहा रज़ी. से हुई तथा उनके हाँ मुहम्मद बिन तलहा पैदा हुआ, परन्तु इतिहास में वर्णन मिलता है कि हज़रत तलहा अपने बेटे मुहम्मद के साथ इतना प्यार एवं स्नेह नहीं करते थे जितना कि हज़रत हमना रज़ी. के पहले बच्चों के साथ, तथा लोग यह कहते थे कि किसी और के बच्चों को इतने प्रेम से पालने वाला तलहा से बढ़ कर कोई नहीं।

इसी घटना का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि देखो! एक महिला का अपने प्यार करने वाले पति के साथ कितना गहरा सम्बंध होता है, तो इससे आप स. का यह अभिप्रायः था कि पुरुषों को चाहिए कि वे पत्नियों के साथ सुन्दर व्यवहार किया करें तथा छोटी छोटी बातों पर उनको मारने तथा कूटने न लग जाया करें। जब उनकी पत्नियाँ अपने प्रिय परिजनों से जुदा होकर इनके पास रहती हैं तो उनका सम्मान किया जाए यही न्याय संगत है तथा बात बात पर उनके साथ झगड़ा फ़साद न किया जाए। हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया- हर बात में एक सबक़ होता है, इंसान ध्यान पूर्वक सुने और सोच तो फिर पता लगता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात केवल उस व्यक्ति के लिए नहीं थी बल्कि सामान्य रूप में हर एक के लिए एक नसीहत है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने बयान फ़रमाया है कि जब आप स. मदीने में दाख़िल हुए तो मदीने की उन महिलाओं को जिनके रिशतेदार युद्ध में शहीद हो गए, उनकी ख़बरें पहुंच चुकी थीं, उन्होंने रोना शुरु कर दिया। आप स. ने जब महिलाओं के रोने की आवाज़ें सुनीं तो आप स. को मुसलानों की पीड़ा का ध्यान आया तथा आप स. की आँखें डुबडुबा आईं। फिर आप स. ने फ़रमाया- हमारे चाचा तथा दूध शरीक भाई हमज़ा भी शहीद हुए हैं, परन्तु उनका मातम, मृत्युशोक करने वाला कोई नहीं? यह सुन कर सहाबा रज़ी. जिनको आप स. की भावनाओं तथा इच्छाओं को पूरा करने की तड़प थी, वे अपने घरों की ओर दौड़े तथा अपनी महिलाओं से जाकर कहा- बस अब तुम अपने प्यारों का रोना बन्द कर दो तथा रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मकान पर जाकर हमज़ा रज़ी. का मातम करो। इतने में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चूँकि थके हुए तशरीफ़ लाए थे, आप स. आराम फ़रमाने लगे। जब रात का एक तिहाई भाग बीत गया तो हज़रत बिलाल रज़ी. ने आप स. को इशा की नमाज़ के लिए जगाया। जब आप स. जागे तो उस समय तक व महिलाएँ आपके मकान पर हज़रत हमज़ा रज़ी. का विलाप कर रही थीं। आप स. ने फ़रमाया- यह क्या हो रहा है? निवेदन किया गया- या रसूलुल्लाह! मदीने की महिलाएँ हज़रत हमज़ा के निधन पर रो रही हैं। आप स. ने फ़रमाया- अल्लाह तआला मदीने की महिलाओं पर दया करे, इन्होंने मेरे साथ सहानुभूति प्रकट की है। फिर फ़रमाया- मुझे पहले ही पता था कि अन्सार को मुझस अत्यधिक प्यार है। साथ ही फ़रमाया- इस प्रकार विलाप करना अल्लाह तआला की दृष्टि में पसन्द न आन वाला काम है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं- आप स. ने हज़रत हमज़ा रज़ी. के निधन पर किसी के न रोने की बात को अभिव्यक्त किया, उस समय भी आप स. की भावना केवल दिलासा देने की थी तथा जब आप स.

ने रोने वालों को मना फ़रमाया उस समय भी आप स. की भावना दिलासा देने की थी। आप स. ने मना भी कर दिया तथा उनका धन्यवाद भी कर दिया, हमें यह कितना शानदार तथा महामान्य तरीक़ा नज़र आता है जो इतने भावुक समय पर आप स. ने धारण किया।

जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर में दाख़िल हुए तो अपनी बेटी फ़ातमा रज़ी. को तलवार पकड़ाते हुए फ़रमाया कि ऐ बेटी! इस तलवार पर लगे ख़ून को धो डाल, अल्लाह की क़सम, आज तो इस तलवार ने हक़ अदा कर दिया है। फिर हज़रत अली रज़ी. ने भी अपनी तलवार थमाते हुए वही शब्द कहे जो रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाए थे। यह सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ अन्य सहाबियों का नाम लेकर फ़रमाया कि उन्होंने भी बड़ी बहादुरी दिखलाई। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. इस सम्बंध में फ़रमाते हैं- अर्थात, आप स. ने यह भी उचित न समझा कि आप स. का दामाद कोई ऐसी बात करे जिससे दूसरे सहाबियों के दिल को ठेस पहुंचे।

हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया कि ओहद के युद्ध की घटनाएँ तो यहाँ समाप्त होती हैं। फ़रमाया- एक अन्य युद्ध है जिसका नाम हमरुल असद की लड़ाई है, जो शव्वाल तीन हिजरी में हुई। यह लड़ाई वास्तव में ओहद की लड़ाई का ही भाग है, शेष पूरक है तथा इसके द्वारा प्राप्त परिणाम के आधार पर ओहद के युद्ध का वास्तविक अर्थों में मुसलमानों की ही विजय माना जाता है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- आगे विस्तार है इसका, इन्शाअल्लाह फिर बयान करूँगा, तथा फ़रमाया- दूसरी बात जो सामान्यतः मैं तहरोक करता रहता हूँ वह दुआ के लिए है, दुआएँ जारी रखें, जैसा कि विचार एवं आशंका थी ईरान पर इसराईल ने हमला कर दिया, हर एक को पता ही है, इससे और अधिक हालात ख़राब होंगे। अल्लाह तआला इन दुनिया के लीडरों को भी बुद्धि दे जो विश्व युद्ध को हवा देने की और अधिक कोशिश कर रहे हैं। मुस्लिम उम्मा को भी बुद्धि दे तथा इनको तौफ़ीक़ दे कि वे एक बन कर फिर विरोधी का मुक़ाबला कर सकें तथा विवेक से काम ले सकें।

अन्त में हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाह ने पिछले दिनों वफ़ात पाने वाले दो मृतकों मुकर्रम मौलाना ग़ुलाम अहमद साहब नसीम, मुरब्बी सिलसिला, हाल निवासी अमरीका तथा मुकर्रम एहसानुल्लाह ज़फ़र साहब, पूर्व अमीरे जमाअत अमरीका का विस्तार पूर्वक सद्वर्णन फ़रमाया तथा उनके सद्गुण बयान फ़रमाए तथा उनके जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा भी फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

**हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652**

**टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131**